पंचम अध्याय

उपसंहार

उपसंहार

हिंदी–उर्दू के समर्थ लेखक, बहुमुखी प्रतिभा के कलाकार डॉ. राही मासूम रज़ा आधुनिक युग के श्रेष्ठ साहित्यकार माने जाते हैं । उन्होंने उपन्यास, काव्य के साथ–साथ हिंदी फिल्म संसार और दूरदर्शन के इतिहास पर अपनी अमिट छाप छोडी है । स्वानुभूति को साहित्य का आधार बनानेवाले डॉ. राहीजी का अध्ययन क्षेत्र बहुत व्यापक रहा है । दूरदर्शन पर प्रस्तुत धारावाहिक महाभारत के संवादों से उनके अध्ययन, चिन्तन एवं तटस्थ दृष्टिकोण का परिचय होता है ।

लेखक की कलात्मकता का परिचय देनेवाले "आधा गाँव" उपन्यास में उन्होंने सन् 1937 से सन् 1952 ई. तक के परिवर्तनों, समस्याओं एवं वास्तविकताओं को अंकित किया है । उन्होंने युगीन परिवेश और उसके परिणामस्वरुप उद्भूत समस्याओं का लेखा–जोखा प्रस्तुत किया है ।

"आधा गाँव" की अनेक विशेषताएँ हमारे सामने प्रस्तुत होती हैं । इस उपन्यास का कथानक अन्य उपन्यासों से कुछ अलग दिखाई देता है । इसमें गंगौली की समग्रता, विविधता, वस्तुनिष्ठता देखने को मिलती है । इसके कथानक में सुंदरता के साथ कुरूपता भी है । यह कथानक अलग–अलग अध्यायों में विभाजित है कहानी के बीच में ही लेखक ने भूमिका दी है जो लेखक के मतानुसार कहानी को आगे बढाने के लिए जरूरी है ।

उपन्यास में पात्रों की भीड हैं । साथ में लेखक स्वयं इस उपन्यास में पात्र के रूप में सामने आये हैं और कथानक खूद कह रहे हैं । लेखक ने इन अनेक पात्रों को प्रसंगानुसार लिया है । यहाँपर लेखक का उद्देश्य किसी व्यक्ति का चरित्र चित्रित करना न होकर गंगौली में स्थित शीआ समुदाय का चित्रण करना रहा है । इन पात्रों के द्वारा इस समुदाय की जीवन–पध्दति समझने में सहायता मिली है । पात्रों की आवश्यकता होने पर ही उन्हें प्रस्तुत करना लेखक की विशेषता रही है । उन्होंने पात्रों के द्वारा समस्या को अभिव्यक्त किया है । जैसे तन्नू मेजरद्वारा युध्द समस्या, मौलवी बेदार–बछनियाद्वारा अनमेल विवाह, हकीम कम्मोद्वारा नई–पुरानी पीढ़ी के अंतराल, मिगदाद–सैफुनिया, द्वारा जातिभेद की समस्य तथा सईदाद्वारा पढी–लिखी लडकियों के स्वावलंबन के मार्ग में उपस्थित बाधाओं का चित्रण है ।

सभी पात्रों को संगठित कर लेखक ने अपने कथानक को सही ढंग से प्रस्तुत किया है । पूरे गॉंव की समग्र कहानी प्रस्तुत करने में लेखक सफल बन गए हैं ।

इस उपन्यास के संवादों से उस समय की स्थिति का पता हमें चलता है । भारत-पाकिस्तान विभाजन के पश्चात् हुई मुस्लिमों की मानसिकता का पता हमें कथोपकथन के द्वारा चलता है । उपन्यास के कथोपकथन की उपयुक्तता सिध्द होती है । लेखक उपन्यास में चित्रित गॉंव के परिवार का सदस्य होने के कारण ये संवाद सजीव बन गए हैं ।

"आधा गॉंव" की भाषा को लेकर अनेक आलोचकों ने इसकी आलोचना की है । इस उपन्यास में "भोजपुरी उर्दू" का प्रयोग किया है । जिसमें गालियाँ अधिक होने के कारण इसे फूहड, अश्लिल माना गया है । परन्तु गंगौली के शीआ मुस्लिमों की बोलचाल की भाषा में ही गालियाँ शामील होने के कारण इन्हें निकाल देना उचित नहीं है । जिससे भाषा का प्रभाव कम होकर संवाद बेजान लगेंगे । इस उपन्यास की विशेषता भाषा में भी दिखाई देती है जो अन्य उपन्यासों से अलग है । इससे उस अंचल की विशिष्टता का पता चलता है ।

शैली के अन्तर्गत रिपोर्ताज शैली, व्यंग्यत्मक शैली, फोटोग्राफिक शैली आदि का प्रयोग किया है । व्यंग्यशैली का प्रयोग इसकी विशेषता रही है । जिसमें मोहर्रम में बेहोश होने की होड, हकीमसाहब का रेल खरीदने का सपना देखना, मजलिसों में स्त्रियों का रोना, उर्दू बोलने की शुरूआत आदि के वर्णन में व्यंग्यात्मक शैली का प्रयोग किया गया है ।

"आधा गॉंव" उपन्यास का वातावरण भारत-पाकिस्तान विभाजन के समकालीन जीवन का है । पाकिस्तान बन जाने पर हुए प्रतिक्रियाओं को व्यक्त करना उपन्यासकार ने आवश्यक समझा है । भारत-पाकिस्तान विभाजन का काल वर्णित करने में लेखक का उद्‌देश्य लोगों पर हुए प्रभावों को वर्णित करना रहा है । स्वार्थी लोग की गन्दी राजनीति के फलस्वरुप बने पाकिस्तान से साम्प्रदायिकता, पारिवारिक बिखराव, अकेलेपन की भावना, रूग्ण मानसिकता, आपसी शत्रुता की भावना निर्माण हो गई है, जिसे उपन्यासकार ने प्रभावी ढंग से अभिव्यक्त किया है ।

"आधा गाँव" में चित्रित वेशभूषा, खान–पान, लोककथा, लोकगीत, प्रथा–परम्परा पाठक के मन को मोहित करनेवाली है । मोहर्रम वर्णन आत्मीयता के साथ करने के कारण सजीव बन गया है । देश–काल वातावरण की दृष्टि से उपन्यास सफल रहा है ।

"आधा गाँव" लिखने का उद्‌देश्य गंगौली में स्थित शीआ मुस्लिमों का वर्णन करना रहा है । आज तक मुस्लिमों का वर्णन हुआ नहीं ऐसी बात नहीं है परन्तु राहीजी ने जिसप्रकार इस उपन्यास को प्रस्तुत किया है वह पहलीबार ही पाठकों के सामने प्रस्तुत हुआ है । लेखक स्वयं मुस्लिम होने पर भी जिस प्रकार से मुस्लिमों के गुण–दोषों को अभिव्यक्त किया है, उससे लेखक की तटस्थ दृष्टि का परिचय होता है ।

शीर्षक के तत्व पर "आधा गाँव" को देखा जाए तो यह शीर्षक इस उपन्यास के लिए योग्य है । "आधा गाँव" में लेखक ने सिर्फ गंगौली के आधे भाग में रहनेवाले शीआ मुस्लिमों का ही वर्णन किया है जिससे यह शीर्षक योग्य लगता है । यह शीर्षक छोटा सार्थक, उचित, आकर्षक एवं पाठकों में कौतूहल जागृत करनेवाला है ।

संक्षेप में कहा जा सकता है कि उपन्यास के प्रमुख तत्वों के आधारपर इसे परखा जाए तो यह उपन्यास सफल सिध्द होता है ।

समकालीन समाज–जीवन से अपनी अलग पहचान रखनेवाला गंगौली का मुस्लिम समाज अपनी समग्र विशेषताओं के साथ "आधा गाँव" उपन्यास में उपस्थित हुआ है । उनकी जीवन प्रणाली, लोककथाएँ, परम्पराएँ, मान्यताएँ अलग हैं । आँचलिक उपन्यास की कसौटीपर "आधा गाँव" शत–प्रतिशत सफल सिध्द होता है ।

प्रकृति का प्रधानरूप से चित्रण तो इस उपन्यास में उपलब्ध नहीं होता । यह कथा गंगौली से जुडी होने के कारण मिट्‌टी से अलग नहीं है । अतः रूढ अर्थ में इसमें प्रकृति का चित्रण न होकर भी "आधा गाँव" उपन्यास प्रकृति से अलग नहीं है ।

प्रकृति का पार्श्वभूमि के रूप में चित्रण "आधा गाँव" उपन्यास में नहीं है । पेड-पौधे, पशु-पक्षी, झील-झरने आदि का वर्णन यहाँपर नहीं है परंतु कथावस्तु प्रकृति से प्रभावित एवं जुडी हुई है ।

संस्कृति के सम्पूर्ण अंकन में गंगौली के सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक स्वरूप को प्रस्तुत किया है । युगीन परिवेश के साथ धर्म का स्वरूप बदल रहा है । परम्परागत मान्यताओं में परिवर्तन उपस्थित हो रहा है परिणमतः नयी-पुरानी पीढी का संघर्ष शुरू है ।

जाति-प्रथा की दीवारें तोडने का प्रयास जारी है । उपन्यासकार ने उक्त तथ्यों को प्रस्तुत कर गंगौली के सम्पूर्ण सांस्कृतिक वातावरण को अंकित किया है ।

लोकजीवन और सामाजिक चेतना के द्वारा गंगौली के शीआ समुदाय के समग्र लोकजीवन, को प्रस्तुत करते हुए राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक परिवेश का चित्रण किया है । युगीन परिवेश के प्रभाव से गंगौली के लोगों मे उपस्थित नयी सामाजिक चेतना बताई गई हैं । लेखक ने जिस अंचल का चित्रण किया है वह काल्पनिक नहीं है तथा उसे प्रस्तुत करते समय लेखक का दृष्टिकोण वास्तववादी रहा है । परिणमतः इसमें समाज जीवन का सही अंकन हुआ है । समाज जीवन को प्रस्तुत करते समय गंगौली के शीआ समुदाय के सभी वर्गों का उदारवादी दृष्टि से चित्रण किया गया है । यहाँ के मुस्लिम जमींदारों एवं राकी, जुलाहा, चमार आदि जातियों का निःष्पक्ष भाव से चित्रण मिलता है ।

शीआ समुदाय के सांस्कृतिक जीवन का परिचय भी यहाँपर मिलता है । उनके विवाह, धार्मिक-त्यौहार, पर्व सभी का वर्णन यहाँपर दिया गया है । यह चित्रण-लेखन ने प्रादेशिक अस्मिता और आत्मीयता के भाव से किया है जिसे पढते समय कथानक यथार्थ लगता है ।

ग्रामीण वातावरण और पिछडे हुए लोगों का जीवन चित्रणइस विशेषतापर यह उपन्यास सही है । दुनिया में अनेक परिवर्तन आने पर भी यह समुदाय अन्य समाज से पिछडा ही रहा है । परिवर्तन की तेज गति के साथ मेल न होने के अपेक्षित परिवर्तन के चिन्ह यहाँ उपलब्ध नहीं होते ।

गंगौली में प्रचलित लोकगीतों, लोककथाओंद्वारा शीआ समुदाय के भाव पक्ष को प्रकट किया है । गंगौली के लोगों का खान–पान, रहन–सहन, रूढी–परम्परा, वहाँ की स्थानीय बोली और उत्सव पर्वों के प्रति आकर्षण उपन्यास को आँचलिकता की कसौटीपर सफल बनाता है । डॉ. राहीजी ने "आधा गाँव" उपन्यास में देहाती भोजपुरी इस्लामी जनसंस्कृति चित्रण में सफलता प्राप्त की है ।

उपर्युक्त विशेषताओं के साथ ही वहाँ के लोगों के सामने आयी सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक समस्याओं को भी प्रस्तुत किया है । भारत–पाकिस्तान विभाजन के पश्चात् हिन्दू–मुस्लिमों की बनी मानसिकता का वर्णन है । हिन्दू–मुस्लिमों में व्याप्त साम्प्रदायिकता की भावना के दुष्परिणामों का विवेचन प्रभावी ढंग से किया है ।

हिन्दुओं की तरह मुस्लिमों में भी अनेक जातियाँ रहती है जिसके आधारपर ये लोग सामाजिक स्तरीकरण करते हैं । जातिवादी मनोवृत्ति से सामाजिक एकता–शान्ति भंग होती है ।

जमींदारों का शोषण भी एक समस्या के रूप में यहाँपर सामने आया है । गंगौली के जमींदारों द्वारा अन्य लोगोंपर किए गये कुकर्मों का विस्तार के साथ वर्णन है ।

भाषा समस्या के रूप में हिन्दी–उर्दू समस्या को प्रस्तुत किया है । वास्तव में दोनों भाषाएँ एक ही भाषा के दो रूप है । गाँव में व्याप्त प्रशासकीय भ्रष्टाचार, कोर्ट–कचहरी में व्याप्त भ्रष्टाचार की कहानी देकर लेखक ने कारणों के रूप में जनता की नासमझी, अज्ञान, अशिक्षा का उल्लेख किया है । इसी वजह से गाँव में बेरोजगारी, दरिद्रता तथा ऋणग्रस्तता की समस्याएँ विकराल रूप से बढ रही हैं । जमींदारी उन्मूलन के पश्चात् जमींदारों के आर्थिक साधन छीन गए और दूसरा व्यवसाय या नौकरी करना वे शान के खिलाफ समझते रहें उनकी आर्थिक दशा बिगडती गयी । परन्तु सईदा फुस्सूमियाँ जैसे लोगों ने परिवर्तन की गति को देखकर विकास पथपर बढ़ना उचित समझा । परिवर्तन की गति को न समझने–आपनानेवाले टूट गये ।

विवाह समस्या के अन्तर्गत प्रेमविवाह, विधवा–विवाह विरोध, अनमेल विवाह, अवैध मातृत्व तथा अवैध संतान की समस्या से उद्भूत दूष्परिणामों को भी दर्शाया है । रखैल प्रथा, वेश्यावृत्ति से उद्भूत समस्या, विवशताओं को चित्रित कर उनके प्रति सहानुभूति दर्शायी है ।

इसप्रकार राहीजी के "आधा गाँव" उपन्यास को उपन्यास के तत्वों एवं आँचलिकता के तत्वों के आधारपर परखा जाए तो वह सफल सिध्द होता है । शीआ लोगों के जीवन को प्रस्तुत करना यही लेखक का उद्देश्य रहा है । वे इस उद्देश्य में सफन बन गए हैं ।

उपलब्धियाँ

1. "आधा गाँव" उपन्यास के अक्षय कीर्ति का मानदंड है ।
2. भारतीय मुस्लिम समाज की विडम्बनापूर्ण जीवन की कहानी अनेक कोणों से परखकर सामने रखने में उपन्यासकार सफल रहे हैं ।
3. पाठक नये विषय क्षितीज से परिचित होकर लोकसंस्कृति के साथ जुड जाते हैं ।
4. समकालीन परिवेश को कलात्मक ढंग से अभिव्यक्त किया गया है ।
5. समस्याओं का समाजशास्त्रीय दृष्टि से विवेचन किया है ।
6. उपन्यासकार ने सामाजिक और राष्ट्रीय समस्याओं का केवल वर्णनात्मक आलेख प्रस्तुत न कर समाधान देने का प्रयत्न किया है ।
7. आँचलिक उपन्यास साहित्य में अपनी अलग पहचान बनाने में लेखक सफल रहे हैं ।

. . . . .